uploading date - 02-02-2026

Subject - Sociology

Topic - Social Stratification

Study material for - MDC SEMESTER-I

'सामाजिक असमानता' एवं 'सामाजिक स्तरीकरण' के मध्य अंतर ⇒

'सामाजिक असमानता' की अवधारणा 'सामाजिक विभेदन' (social differentiation) की अवधारणा से गंभीर रूप से जुड़ी हुई है। समाज के सदस्यों के मध्य आयु, लिंग, व्यवसाय, प्रजाति आदि के आधार पर विद्यमान भिन्नता को 'सामाजिक विभेदन' कहा जाता है। समाज के सदस्यों के मध्य विद्यमान यह भिन्नता जब उन्हें, समाज में उपलब्ध 'प्रतिष्ठा', 'संपत्ति', 'शक्ति' आदि जैसे संसाधनों की असमान उपलब्धता का कारण बन जाती है, तब 'सामाजिक विभेदन', 'सामाजिक असमानता' का रूप ले लेती है। उदाहरण के लिए, वर्तमान अधिकांश समाजों में, पुरुषों को आर्थिक,

सामाजिक, राजनीतिक आदि क्षेत्रों में स्त्रियों की तुलना में अधिक अवसर प्राप्त हैं। इस प्रकार 'लिंग' जो एक सामाजिक भिन्नता है सामाजिक असमानता का आधार बन जाती है।

जबकि 'सामाजिक स्तरीकरण' 'सामाजिक असमानता' का संस्थागत स्वरूप है। इसके अंतर्गत समाज के सदस्यों को, पद-प्रतिष्ठा, शक्ति, संपत्ति आदि जैसे संसाधनों की असमान उपलब्धता के आधार पर व कुछ निर्धारित नियमों के अनुरूप, उन्हें एक-दूसरे की तुलना में उच्च अथवा निम्न पदानुक्रम (Rank) प्रदान किया जाता है।

सामाजिक स्तरीकरण वर्तमान सभी समाजों की एक महत्वपूर्ण विशेषता है व निम्नांकित में से कोई-न-कोई प्रकार, सभी समाजों में अवश्य विद्यमान है -

(i) आयु-समूह व्यवस्था (मूर्वी अफ्रीकी समाजों में पायी जाती है)

(ii) जाति-व्यवस्था (अपने विशुद्ध रूप में 'भारतीय समाज' में पायी जाती है)

(iii) वर्ग-व्यवस्था (वर्तमान सभी आधुनिक समाजों में पायी जाती है)